SWAR SINDHU: NATIONAL PEER-REVIEWED/REFEREED JOURNAL OF MUSIC
A UGC CARE LISTED JOURNAL
ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

बिहार के लोक संगीत व संस्कृति का लोक जीवन पर प्रभाव

SANJEET KUMAR[1] DR. KULVINDER SINGH[2]

1 Research Scholar (Performing Arts), Lovely Professional University, Phagwara, Punjab
2Associate Professor (Performing Arts), Lovely Professional University, Phagwara, Punjab

सारांश

भारत में संगीत एक ऐसा अभिव्यक्ति का रूप है जो न केवल मनोरंजन का माध्यम है, बल्कि यह समाज, संस्कृति और धार्मिक आस्थाओं से भी गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। बिहार, भारतीय उपमहाद्वीप का एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राज्य है, जहां की लोक संगीत संस्कृति भारतीय लोक संगीत की विविधता को प्रकट करती है। बिहार के लोक संगीत की अपनी विशिष्ट पहचान है, जो न केवल राज्य के समाजिक और सांस्कृतिक जीवन को दर्शाता है, बल्कि लोक जीवन के कई पहलुओं को भी जीवंत बनाता है। लोक संगीत को केवल एक कला के रूप में नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक धरोहर के रूप में देखा जाता है, जो समाज के विभिन्न वर्गों, जातियों और समुदायों के बीच सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस लेख में हम बिहार के लोक संगीत संस्कृति के लोक जीवन पर प्रभाव का गहराई से अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य: जहां बिहार सदियों से पलायन का दंस झेलते आ रहा है वहां आज भी लोक संस्कृति में बिहार के लोक संगीत का अपना अहम स्थान है। इस शोध में यह बताने का प्रयास किया गया है कि बिहार के लोक संगीत संस्कृति, बिहार के लोक जीवन में क्या स्थान रखती है तथा उनके जीवन में बिहार के लोक संगीत का क्या प्रभाव है?

शोध विधि: प्रस्तुत शोध द्वतियीक आकड़ा के आधार पर किया गया है, जिसमें पहले से प्रकाशित आलेख, पुस्तक, ब्लॉग, साक्षात्कर आदि की सहायता और संदर्भ से शीर्षक 'बिहार के लोक संगीत संस्कृति का लोक जीवन पर प्रभाव' पर प्रकाश डाला गया है।

बीज शब्द: *बिहार, लोक संगीत, लोक जीवन*

मुख्य आलेख

लोक संगीत किसी भी प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर और पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। बिहार, जो भारतीय उपमहाद्वीप के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध राज्य है, अपनी समृद्ध लोक संगीत परंपराओं के लिए भी जाना जाता है। बिहार का लोक संगीत उसकी जनता की भावनाओं, रीति-रिवाजों, परंपराओं और जीवन की सादगी को व्यक्त करने का एक प्रभावशाली माध्यम है। यह संगीत बिहार के ग्रामीण जीवन, त्योहारों, और विभिन्न सामाजिक अवसरों से जुड़ा हुआ है। लोक संगीत न केवल आनंद का स्रोत है, बल्कि यह सामाजिक और धार्मिक संदर्भों में भी गहरी जड़ें रखता है।

बिहार की लोक संगीत परंपरा बहुत पुरानी और समृद्ध है। यह राज्य विभिन्न प्रकार के लोक गीतों, संगीत शैलियों और नृत्य रूपों का घर है, जो न केवल शहरी क्षेत्रों, बल्कि ग्रामीण जीवन में भी गहरे तौर पर जड़े हुए हैं। बिहार के लोक संगीत में पारंपरिक गीतों, भजन-कीर्तन, चैती, सोहर, विवाह गीत, माघी, बिदाई गीत, लोक नृत्य और बहुत कुछ शामिल है। ये संगीत रूप बिहार की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक धारा को व्यक्त करते हैं और लोक जीवन के विभिन्न पहलुओं का विस्तार से वर्णन करते हैं।

बिहार के लोक संगीत की विविधता

बिहार का लोक संगीत अत्यंत विविध और बहुआयामी है, जिसमें नृत्य, गीत, संगीत और कला की विभिन्न शैलियाँ शामिल हैं। यहाँ के लोक गीतों का व्यापक प्रभाव यहाँ के जन जीवन पर होता है। हर गीत का अपना विशेष संदर्भ और उद्देश्य होता है, जो किसी सामाजिक, धार्मिक या सांस्कृतिक अवसर से जुड़ा होता है।

मुख्य रूप से मगही, भोजपुरी, मैथली, और हिंदी भाषा में बिहार लोक गीत गाये जाते है। जिसमें सोहर, बिरहा, कजरी, निर्गुण, झुम्मर, झूला गीत, चटगांव गीत, सपेरा गीत, सोहर गीत, फगुआ (होली) गीत जैसे विभिन्न प्रकार के लोक गीतों का अस्तित्व बिहार में है। ये गीत न केवल यहाँ के जीवन को दर्शाते हैं, बल्कि यहाँ की सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में भी एक गहरा संबंध रखते हैं।

बिहार के लोक संगीत लोक संगीत के प्रमुख प्रकार

बिहारी लोक गीत विशेष रूप से यहाँ के ग्रामीण जीवन और प्राकृतिक सौंदर्य से प्रेरित होते हैं। इन गीतों में आमतौर पर प्रेम, प्रकृति, रीति-रिवाज, और समाजिक मुद्दों का चित्रण किया जाता है। बिहारी लोक गीतों की कई विशेषताएँ होती हैं जैसे – सरल भाषा, प्रभावी संगीत, और सजीव प्रदर्शन। बिहारी लोक संगीत में प्रचलित कुछ प्रमुख गीतों में सोहर गीत, फगुआ (होली), बिरहा, कजरी, निर्गुण, झुम्मर, छठ गीत आदि शामिल हैं। बिहार लोक गीत के कुछ प्रमुख गीत की जानकारी एवं उसके बोल:-

(i) निर्गुण गीत

यह गीत 'निर्गुण' या 'वैराग्य' की भावना से परिपूर्ण है जिसमें मनुष्य भक्ति के जनक के माध्यम से सांसारिक ज्ञान प्राप्ति के मार्ग की ओर कदम बढ़ाता है। इस शैली को शास्त्रीय गायन के रूप में स्थापित करने का श्रेय प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक 'पंडित कुमार गांधी' को जाता है। भरत शर्मा व्यास, मदन राय, गोपाल राय और अन्य लोक गायकों द्वारा गाए गए निर्गुण आज भी लोगों के दिलों में जगह बनाए हुए हैं।

निर्गुण गीत के बोल:

कवने खोतवा में लुकइलू आहि रे बालम चिरई। आहि रे बालम चिरई, आहि रे बालम चिरई।
बनदर ढूँढली ढूँढली नदी के तीरे-बन ढूँढली दर- सांझ के ढूँढली रात के ढूँढली ढूँढली होत फजीरे
जन में ढूँढली मन में ढूँढली ढूँढली बीच बजारे, हियाढूँढली विरह के मारे सि के ढूँढलीहिया में पइ-
कवने अँतरे में समइलू आहि रे बालम चिरई, कवने खोतवा में लुकइलू आहि रे बालम चिरई।.....

(ii) फगुआ (होली) गीत

होली गीत बिहार के प्रमुख त्योहारों में से एक हैं। इन गीतों में रंगों की बुराई पर अच्छाई की विजय, प्रेम और उल्लास का चित्रण होता है। होली के दौरान, गाँव-गाँव में लोग इन गीतों को गाते हैं और रंगों के साथ मिलकर सामाजिक सामूहिकता का आनंद लेते हैं।

फगुआ गीत के बोल:

धनिधनि ए सिया रउरी भाग, राम वर पायो। लिखि लिखि चिठिया नारद मुनि भेजे, विश्वामित्र पिठायो।
साजि बरात चले राजा दशरथ, जनकपुरी चलि आयो, राम वर पायो।
वनविरदा से बांस मंगायो, आनन माड़ो छवायो। कंचन कलस धरतऽ बेदिअन परऽ,
जहाँ मानिक दीप जराए, राम वर पाए। भए व्याह देव सब हरषत, सखि सब मंगल गाए,
राजा दशरथ द्रव्य लुटाए, राम वर पाए। धनि धनि ए सिया रउरी भाग, राम वर पायो।

(iii) सोहर गीत

बिहार में सोहर गीत प्रायः बच्चों के जन्म, विशेष अवसरों, और परिवार में नई खुशियाँ आने पर गाए जाते हैं। इन गीतों में खुशी, आभार और धार्मिक आस्था का अद्भुत संगम होता है। सोहर गीत न केवल सांस्कृतिक धरोहर हैं, बल्कि सामाजिक उत्सवों और परंपराओं का हिस्सा भी हैं। सोहर गीतों में देवी-देवताओं की स्तुति, खासकर माता सीता, भगवान राम, कृष्ण और अन्य लोक देवताओं का वर्णन होता है। इन गीतों का संगीत साधारण होता है, जिसमें ढोलक, मंजीरा और हारमोनियम जैसे वाद्य यंत्र प्रमुख हैं। सोहर गीतों को अधिकतर महिलाएँ गाती हैं और यह उनके भावनाओं और खुशियों को व्यक्त करने का एक माध्यम है।

सोहर के बोल:

जुग जुग जियसु ललनवा, भवनवा के भाग जागल हो, ललना लाल होइहे, कुलवा के दीपक मनवा में आस लागल हो ॥
आज के दिनवा सुहावन, रतिया लुभावन हो, ललना दिदिया के होरिला जनमले, होरिलवा बडा सुन्दर हो।
नकिया त हवे जैसे बाबुजी के, अंखिया ह माई के हो, ललन मुहवा ह चनवा सुरुजवा त सगरो अन्जोर भइले हो ॥.....

(iv) बिरहा

बिरहा अपनी अद्भुत लोकधुनों और मार्मिक भावनाओं के कारण लोकसंस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह विशेषकर भोजपुरी भाषा में गाया जाता है और इसे एक शोकगीत या वीर-रस प्रधान गीत के रूप में जाना जाता है। बिरहा गीत आमतौर पर जीवन, सामाजिक मुद्दों, प्रेम, देशभक्ति, और धार्मिक पहलुओं पर आधारित होते हैं। कभी-कभी यह गायन वीरता, विदाई या संघर्ष की कहानियों को भी दर्शाता है। बिरहा गीतों में हारमोनियम, ढोलक, मजीरा और बांसुरी जैसे वाद्य यंत्रों का उपयोग होता है। बिरहा गीत सिर्फ मनोरंजन नहीं है, यह जीवन के यथार्थ को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम भी है। आज भी बिहार और पूर्वांचल के गाँव-देहातों में ये गीत मेलों, शादी-विवाह और उत्सवों का हिस्सा बने हुए हैं।

बिरहा के बोल:

कौन फूल फूले परेमियां धरती रे धरमुआं, रओ कोन फूल फूले असमान
कोन फूल फूले परेमियाँ गंगा माइ के गोदिया,bकि खुशी-खुशी रहै भगमान?
दूभी फूल-फूले परेमियां धरती रे धरमुआं, रओ तारा फूल फूले असमान
कमल फूल फूले परेमियां गंगा माइ के गोदिया रओ खुशी-खुशी रहै भगमान।

(v) कजरी

कजरी बिहार की एक लोकप्रिय लोकगीत विधा है, जो अपनी मधुरता, भावनात्मक गहराई और ग्रामीण संस्कृति को सजीव रूप में प्रस्तुत करती है। ये गीत मुख्यतः बारिश के मौसम में गाए जाते हैं और प्रकृति, प्रेम, विरह, और जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते हैं। कजरी गीतों का मूल उद्देश्य लोक जीवन के अनुभवों को संगीत और शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त करना है। कजरी गीत बिहार के विभिन्न इलाकों में अपने-अपने अंदाज में गाए जाते हैं, जैसे भोजपुर, मगध, और मिथिला क्षेत्र में। प्रसिद्ध कजरी गीत: "सावन में कजरी गा रहीं हैं, सखी रिमझिम बरसे बदरिया"; "झूला झूलें अंबवा के डार"; "सावन की बहार रे सखी" है। ये गीत मनोरंजन के साथ-साथ अध्यात्म का भी अनुभव कराते हैं।

कजरी के बोल:

कहू ने सगुन केर बतिया गे दैया, चारि मास हम आस लगाओल
विरह दगध भेल छतिया गे दैया, अपनो ने आबथि, लिखि ने पठाबथि
केहन कठोर छनि छतिया गे दैया, ककरा सँ हम पतिया लिखायब
के समोधत बतिया गे दैया, देओरा सँ हम पतिया लिखायब
ननदि समोघत बतिया गे दैया, सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, कोना खेपब दिन-रतिया गे दैया

(vi) झुम्मर

बिहार की सांस्कृतिक धरोहर में झुम्मर गीत का विशेष स्थान है। यह पारंपरिक लोकगीतों की एक शैली है, जो विशेष रूप से बिहार के ग्रामीण इलाकों में प्रचलित है। झुम्मर गीत मुख्य रूप से उत्सवों, सामाजिक समारोहों और पारिवारिक अवसरों पर गाए जाते हैं। इनमें लोकजीवन की सादगी, प्रेम, व्यंग्य, और सांस्कृतिक विविधता झलकती है। झुम्मर गीतों की धुनें सरल, मधुर और आसानी से गुनगुनाने लायक होती हैं। इसमें ढोल, मृदंग, और हारमोनियम जैसे वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है। ये गीत प्रकृति की सुंदरता, प्रेम और विरह, शादी-विवाह के अवसर, कृषि और ग्रामीण जीवन, देवी-देवताओं की स्तुति आदि विषयों पर आधारित होते हैं। झुम्मर गीत आमतौर पर समूह में गाए जाते हैं, जहां महिलाएं और पुरुष दोनों शामिल होते हैं। गाने के साथ-साथ झूमने का अंदाज इसे और अधिक मनोरंजक बनाता है। ये गीत पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाए जाते हैं और ग्रामीण समाज की भावनाओं, अनुभवों और कहानियों को व्यक्त करते हैं।

झुम्मर के बोल:

टिकवा जे लइह राजा, बचवा लगाइ हो। टिकुली जे लइह राजा, चमके लिलार हो।,जलदी लउटिह राजा, जड़वा के दिनवाँ हो ॥1॥
हँथवा के फरहर धनि, मुँहवाँ के लाएक हो। से हो कइसे तेजब धनि, जड़वा के दिनवाँ हो। से हो कइसे तेजब धनि जड़वा के रतवा हो ॥2॥
कंठवा जे लइह राजा, सिकड़ी लगाइ हो। टिकुली जे लइह राजा, चमके लिलार हो। जलदी लउटिह राजा, जड़वा के दिनवाँ हो ॥3॥

लोक संगीत का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व

बिहार के लोक संगीत में धार्मिक गीतों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। बिहारी संस्कृतियों में पूजा-अर्चना के अवसरों पर विशेष गीत गाए जाते हैं। खासतौर पर मिथिला क्षेत्र में "जय जय श्री राम" और "हर हर महादेव" जैसे धार्मिक गीतों की परंपरा बहुत पुरानी है। इन्हें विशेष रूप से मंदिरों, घरों और समुदायों में गाया जाता है। इस प्रकार के गीत समाज में धार्मिक एकता और शांति का संदेश देते हैं।

बिहार का लोक संगीत न केवल एक मनोरंजन का साधन है, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक जागरूकता का भी एक साधन बनता है। यह राज्य के विभिन्न समुदायों और जातियों को एक साथ जोड़ता है। विभिन्न समाजों के बीच के भेदभाव को समाप्त करने में भी लोक संगीत की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

लोक संगीत का अस्तित्व और संरक्षण

समय के साथ, बिहार का लोक संगीत बदलावों और आधुनिकता के प्रभाव से अछूता नहीं रहा है। हालांकि, कई युवा पीढ़ियाँ अब शहरीकरण की ओर अग्रसर हो रही हैं और पारंपरिक लोक संगीत की प्रथा में कमी आ रही है, फिर भी यह संगीत अपनी जड़ों को मजबूती से पकड़े हुए है। बिहार सरकार और विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाएँ इस लोक धरोहर को बचाने और बढ़ावा देने के लिए कई प्रयास कर रही हैं।

कुछ वर्ष पहले, बिहार सरकार ने लोक संगीत और नृत्य को बढ़ावा देने के लिए कई कार्यक्रमों और पहल की शुरुआत की थी। इन प्रयासों से यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि लोक संगीत की समृद्ध परंपरा आने वाली पीढ़ियों तक पहुँच सके।

लोक संगीत का बिहार के लोक जीवन पर प्रभाव

बिहार के लोक संगीत का लोक जीवन पर प्रभाव बहुत गहरा और विविध है। यह न केवल मनोरंजन का स्रोत है, बल्कि यह समाज के विभिन्न पहलुओं को समझने का एक खिड़की भी है। लोक संगीत बिहार के लोग अपनी भावनाओं, संघर्षों, खुशियों, दुखों और आस्थाओं को व्यक्त करने के लिए प्रयोग करते हैं। चलिए, विस्तार से देखते हैं कि यह संगीत किस प्रकार बिहार के लोक जीवन पर प्रभाव डालता है।

सामाजिक समरसता और एकता की भावना

बिहार के लोक संगीत में सामाजिक समरसता और एकता को बढ़ावा देने की क्षमता है। लोक गीतों में समुदाय के विभिन्न वर्गों और जातियों के बीच एकजुटता का संदेश मिलता है। जैसे कि "सप्तक" या "चैती" गीतों में प्रेम, भाईचारे और सामाजिक संबंधों को प्रकट किया जाता है। विभिन्न त्योहारों और अवसरों पर गाए जाने वाले लोक गीतों में सभी समुदायों और धर्मों के बीच सामूहिक भावना का निर्माण होता है। बिहार के विभिन्न समाजों में सामूहिक संगीत सत्रों का आयोजन होता है, जिनमें पुरुष और महिलाएं मिलकर गीत गाते हैं, नृत्य करते हैं और इस प्रक्रिया से सामाजिक एकता को मजबूत करते हैं।

धार्मिक और आध्यात्मिक प्रभाव

लोक संगीत में धार्मिक और आध्यात्मिक संदर्भ भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। बिहार में "बिरहा", "कीर्तन", "भजन", "रामधुन", "संतवाणी" जैसे संगीत रूप बहुत लोकप्रिय हैं। ये संगीत रूप न केवल धार्मिक आस्थाओं को प्रकट करते हैं, बल्कि समाज में धार्मिक सहिष्णुता और एकता को भी बढ़ावा देते हैं। "राजस्थानी भजन" और "बिहारी भजन" जैसे धार्मिक गीतों में भगवान श्रीराम, कृष्ण, शिव, गणेश आदि की महिमा का गान किया जाता है। इसके माध्यम से समाज में धार्मिक अनुशासन और आस्थाओं का विकास होता है।

लोक संगीत की यह परंपरा बिहार के ग्रामीण इलाकों में अत्यधिक प्रचलित है, जहां लोग पूजा-अर्चना, जन्म उत्सव, और अन्य धार्मिक आयोजनों में लोक गीतों के माध्यम से भक्ति भाव व्यक्त करते हैं। इन गीतों का धार्मिक और मानसिक शांति से गहरा संबंध होता है, जिससे समाज में एक गहरी आध्यात्मिक चेतना का विकास होता है।

सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराओं का संवर्धन

बिहार के लोक संगीत के माध्यम से राज्य की विभिन्न सांस्कृतिक और सामाजिक परंपराओं का संरक्षण और संवर्धन होता है। बिहार के लोक गीत, नृत्य और संगीत रूपों का आयोजन विशेष अवसरों और त्योहारों पर होता है। जैसे कि "छठ पूजा", "मकर संक्रांति", "होली", "दशहरा", "दीवाली" आदि। इन त्योहारों में लोक संगीत का विशेष महत्व होता है, जो न केवल धार्मिक आस्था को व्यक्त करता है, बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों और जातियों को एकत्र करता है। लोक संगीत और नृत्य, जैसे "लोरी", "सोहर", "चैती" आदि, बिहार के लोक जीवन के हिस्से हैं और समाज की सांस्कृतिक धारा को बनाए रखने में मदद करते हैं। ये गीत न केवल खुशी के पल को व्यक्त करते हैं, बल्कि समाज के विभिन्न पहलुओं, जैसे विवाह, जन्म, मृत्यु, और समाजिक परिवर्तनों को भी दर्शाते हैं। इसके माध्यम से पुरानी परंपराओं और संस्कारों का संरक्षण होता है।

शादी, जन्म और पारंपरिक आयोजनों में भागीदारी: बिहार के लोक संगीत का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह पारंपरिक आयोजनों में भागीदारी को प्रोत्साहित करता है। बिहार में जब कोई विवाह, जन्म या अन्य महत्वपूर्ण घटना होती है, तो लोक संगीत का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है। खासकर विवाह समारोहों में "सगाई गीत", "विवाह गीत", "सात फेरों के गीत", "नन्दनी वियोग", और "सोहर" जैसे गीत गाए जाते हैं। इन गीतों के माध्यम से लोग अपनी खुशी, प्यार और सामूहिकता को व्यक्त करते हैं। यही नहीं, इन गीतों में विवाह से जुड़े पारंपरिक रीतिरिवाज और संस्कारों की जानकारी भी मिलती है, जिससे नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक धरोहर का महत्व समझ में आता है।

आर्थिक और सामाजिक स्थिति का चित्रण: बिहार के लोक गीतों में लोक जीवन की वास्तविकता और समाज के आर्थिक और सामाजिक संदर्भों का चित्रण किया जाता है। "सोहर" जैसे गीतों में खेती, मजदूरी, श्रमिकों की समस्याओं और रोज़मर्रा के जीवन की कठिनाइयों का विवरण मिलता है। इन गीतों के माध्यम से समाज के गरीब और श्रमिक वर्ग की आवाज को भी प्रकट किया जाता है। साथ ही, बिहार के लोक संगीत में सामाजिक असमानताओं, उत्पीड़न और संघर्षों को भी अभिव्यक्त किया जाता है।

कला और मनोरंजन का माध्यम: लोक संगीत बिहार के ग्रामीण जीवन में एक प्रमुख मनोरंजन का साधन भी है। इस संगीत का उद्देश्य केवल कला की प्रस्तुति तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह लोगों के मानसिक और भावनात्मक विकास में भी सहायक होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में लोक संगीत की महत्ता इस कदर है कि यह न केवल उत्सवों और पर्वों का हिस्सा बनता है, बल्कि यह समाज के मानसिक तनावों और संघर्षों से उबरने का एक तरीका भी बनता है। "चौपाल", "गीत मिलन", और "काव्य पाठ" जैसे आयोजन लोक जीवन में मनोरंजन और उल्लास का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं।

नारी जीवन पर प्रभाव: बिहार के लोक संगीत में नारी जीवन की कठिनाइयों, संघर्षों और खुशियों का भी बखूबी चित्रण किया जाता है। विवाह गीतों में नारी का आदर्श और उसकी पारंपरिक भूमिका का विस्तार से वर्णन होता है। इसके अलावा, महिलाओं के अधिकार और उनकी सामाजिक स्थिति पर भी कई लोक गीतों में चर्चा होती है। लोक संगीत के जरिए नारी को समाज में अपनी भूमिका और पहचान को लेकर जागरूक किया जाता है।

निष्कर्ष

बिहार के लोक संगीत की एक समृद्ध और विविध परंपरा है, जो न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि समाज और संस्कृति को भी समृद्ध करती है। यह संगीत लोगों के भावनाओं, परंपराओं, और धार्मिक आस्थाओं का दर्पण है। लोक संगीत की विभिन्न शैलियाँ और उनके साथ जुड़े नृत्य और सामाजिक अवसरों के गीत बिहार की सांस्कृतिक धरोहर के अहम भाग हैं। वर्तमान समय में, जबकि यह संगीत आधुनिकता

की चपेट में आ रहा है, इसके संरक्षण और प्रचार-प्रसार की दिशा में किए गए प्रयासों से यह उम्मीद की जा रही है कि यह परंपरा आने वाली पीढ़ियों तक जीवित रहेगी।

अंततः यह कहा जा सकता है कि बिहार के लोक संगीत का लोक जीवन पर गहरा और व्यापक प्रभाव है। यह न केवल मनोरंजन और धार्मिक आस्थाओं का एक हिस्सा है, बल्कि यह समाज में सामूहिकता, एकता, और सांस्कृतिक परंपराओं के संवर्धन का एक महत्वपूर्ण साधन है। लोक संगीत के माध्यम से बिहार के लोग अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान को बनाए रखते हैं और इसे आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने का कार्य करते हैं। इस प्रकार, लोक संगीत बिहार की सांस्कृतिक धरोहर का अहम हिस्सा है और समाज के विकास में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संदर्भ

1. मिश्र, डॉ शिवनारायण, बिहार के लोक गीत, इतिहास, विभिन्न प्रकार, वर्तमान स्थिति एवं विशेषताएँ, 6 जनवरी 2021, पृष्ठ-20
2. सिंह, विजय कुमार, बिहार की संगीत परंपरा: एक अवलोकन, वर्ष-2018, पृष्ठ-108
3. https://hi.wikipedia.org/wiki/बिहार_की_संस्कृति
4. शेखर, हिमांशु, बिहार की संस्कृति में संगीत: एक अध्ययन, 25 अगस्त 2020, पृष्ठ-2-3
5. https://www.biharonline.in/guide/culture-of-bihar , 18 Feb. 2024
6. बिहार संस्कृति, संस्कार औरपहचान को सलाम, हिंदुस्तान पेपर, 22 मार्च 2012
7. चौधरी, उपेन्द्र कुमार, बिहार के लोक गीतों का संकलन एवं उसके समजीत एवं सांस्कृतिक महत्व, वर्ष-2013-2014, पृष्ठ-4-5
8. वही, पृष्ठ-90